

व्युत्पत्तिरत्नाकरकलिता-अभिधानचिन्तामणिनाममाला (फोल्डर नं. ०१६०६५)

मूल - हेमचन्द्राचार्यजी

संशोधक:-सम्पादक - गणी श्रीचन्द्रविजयजी

मुख्य टाइटल

संशोधकीयं सम्पादकीयं च

अनारतं प्रचलतु भवतः संशोधनयात्रा

शब्दः

शक्तिः

रत्नाकरोनुपमो व्युत्पत्तिरत्नाकरः

संशोधन-सम्पादनपद्धतिः

अनुक्रमणिका

| | |
|---|------|
| प्रथमो देवाधिदेवकाण्डः----- | १ |
| द्वितीयो देवकाण्डः ----- | २३ |
| तृतीयो मर्त्यकाण्ड ----- | १५१ |
| चतुर्थः तिर्यक्काण्डः----- | ४१४ |
| एकेन्द्रियेषु पृथ्वीकायः ----- | ४१४ |
| एकेन्द्रियेषु अप्कायः ----- | ४८१ |
| एकेन्द्रियेषु तेजस्कायः ----- | ५०० |
| एकेन्द्रियेषु वायुकायः ----- | ५०६ |
| एकेन्द्रियेषु वनस्पतिकायः ----- | ५०८ |
| द्वीन्द्रियाः ----- | ५५७ |
| त्रीन्द्रियाः ----- | ५५९ |
| चतुरिन्द्रियाः ----- | ५६० |
| पञ्चेन्द्रियाः, स्थलचर पञ्चेन्द्रियाः ----- | ५६४ |
| पञ्चेन्द्रियाः, खचरपञ्चेन्द्रियाः ----- | ६०३ |
| पञ्चेन्द्रियाः, जलचरपञ्चेन्द्रियः ----- | ६१७ |
| पञ्चमो नारककाण्डः ----- | ६२३ |
| षष्ठः सामान्यकाण्डः ----- | ६२६ |
| अव्ययानि ----- | ६९९ |
| प्रशस्तिः ----- | ६९० |
| सार्थशब्दानुक्रमणिका ----- | ६९३ |
| गुजरातीशब्दानुक्रमणिका ----- | ९५४ |
| श्लोकानामकारधनुक्रमणिका ----- | १००५ |
| ग्रन्थानां ग्रन्थकाराणां च नामानि ----- | १०१३ |

